अध्याय बीस

हरिशंकर वर्मा

[हरिशंकर वर्मा के जनम पूर्वी चम्पारण में भइल रहे । भारत आ नीदरलैण्ड के हेग में उच्च शिक्षा प्राप्त कइला का बाद जमशेदपुर के टेलको में मुख्य कार्मिक प्रबंधक, आ प्रमंडलीय प्रबंधक (सामुदायिक विकास सेवा) पद पर रहलीं । भोजपुरी निबंध के विकास में लमहर योगदान । इहाँ के तीन गो निबंध संग्रह जीवन गीता, आखिरी गीत, आ अहं बहुरूपिया प्रकाशित बा ।]

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

जनम आ छठी

घर में बच्चा जनम लेला । चाहे लइका हो चाहे लइकी । घर से एके बेर आठ-दस औरतन के गीत सुनाला-

हाय, राजा दशरथ घरे अइलन ललना ।
बधाई हम लीं, बधाई हम लीं ॥
दुआरे बाजे सहनाई, बधाई हम लीं ।
बधाई हम लीं ॥

अब शुरू भइल सत्तर बरीस चले के यात्रा । अबई सत्तर बरीस के यात्रा में ओ लइका के दस बेर फोटो खिंचाई । पहिला सात बरीस में अइसन लागी जइसे सबके नजर ओही पर बा, सबके सनेह ओही पर बा । केहू का ना ओ लइका से नफरत आ ना ओह लइका का केहू से नफरत । जेकरा-जेकरा हाथ में ऊ, खेलवना जाई ओकरे मन मोही । जनम के छठवाँ दिने सब लोग बईठ के फेरु गावल-

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

कहत जया रानी, तोहरा अम्मा के बुला दीं ।
जल्दी-जल्दी आईं, मोटर गाड़ी लेके आईं ॥
दरद मोंहे लागे, हम का करी सैंया ।

मतारी गद्‌गद भइली कि उनकर बेटा बादशाह हो गइल जे आवे उहे चूमे आ पेआर करे । पूरा परिवार ओकरे चारो ओर घूमता । तनिको रोअलस कि फुआ गोदी में ले लिहन । चाची नहववली, मऊसी घूमवली । ऊ रोअल ना कि संसारे उमड़ पड़ल । ओकरा हर जरूरत के पूरा करेला लोग बेचैन रहेला । बचवा के बुझाला कि सारा संसार ओकरे ला जीअता । ओकरा बुझाला कि चाँद आ सूरज ओकरे ला बा । बचवा अपने आप में बा, संतुष्ट बा आ ई संसार से मिलल-घुलल बा ।

अब अठवाँ बरीस से चौदहवाँ बरीस में आईं । अब ओकर दोसर फोटो देखीं । अब त बचवा हर बात पर माई से सवाले पूछता- 'ए माई, ऊ गोर काहे बा आ हम करिया काहे बानी ? ए माई, भूत कइसन होला ? भगवान जी कइसन होलन ? ए माई, चंदा पर लोग कइसे जाला ?' अइसन लागता कि बचवा सब के तोड़-फोड़ के जाने के चाहता कि ई सब कहाँ से आइल आ कइसे बनल ? तनु लड़कियन के गोल में खेले जात बाड़ी, आ मंटू, लइकन के गोल में खेले जात बाड़न, मेला-ठेला में तनु

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

गुड़िया ला जिद करतारी त मंटू बंदूक ला, आ बाघ, सिंह के मूर्त्ति ला जिद करत बाड़न । अभई से मंटू लइकिन के भुंड देख के घसक जात बाड़न आ तनु लइकन के भुंड देख के घसक जात बाड़ी ।

अब बचवा के नाँवे भइल- राजनन्दन बाबू यानी राजू । अब देखीं तीसरका फोटो । अब सुषमा के धेयान राजू प जाता आ राजू के धेयान सुषमा प । अब लइकी के लइकन के दल अच्छा लागता आ इहो कि तनी बतिया लेतीं । स्कूल में, घर में, कलब में, मंदिर में भा गिरजा में । अब अजबे मेल-मिलाप होत बा, घर में कवनो के मने नइखे लागत । बुझाता कि एकनी के जिनगी में कवनो छू मंतर हो गइल । जब देखीं त हाथ में सिनेमे आ फिलिमे के पत्रिका । लइकिन स राजेश, अमिताभ, शशिकपूर आ धर्मेन्दर के रट लगवले बा, त लइका लोग अबहिये से सिरहाना मौसमी, जया आ हेमा के फोटो राखे लागल । ए परिवर्तन के का कहल जाव ? कवन नाँव देल जाव, नाँव देला के जरूरतो का बा ? फोटो देखीं लोगनी । अब त बच्चा-बच्ची कवितो करे लागल । ओकरा कविता में एक रस रहेला- पेआर, रोमांस के रस । इहे फोटो रहल 14 से 21 बरिस तक ले । हमार नायक राजू, भी अब

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

त राजू एगो नीमन साथी खोजता । उनका साथे पढ़े वाली सुषमो एगो साथी चाहतिया । कवनो चाहता फिलिम स्टार आ कवनो चाहता अपना मतारी जइसन घर में सेवा करे वाली । सुषमा के बाबू जी जब बियाह के बात चलावेले तब दुआरी पर केवाड़ी के पीछे ढूका लाग के सुने लागेली । आ बबुआ राजू जे बाड़न से कबो-कबो कलक्टर बने के बात करऽताड़न, त कभी इंजीनियर । उनकर दोस्त, त डॉक्टर छोड़के कुछ बनबे ना करी । बबुआ के एगो आऊर दोस्त, जगेसर, बराबर तुकबेतुक के कविता बनावता । उहो त उमिरे के दोस बाटे । ए उमिर में सबकर मन करेला कि कविता बनइतीं आ अपना मनवा के रानी के रीझवतीं । 'श्रमिक' जी एक दिन गावत रहीं- 'इहे मन करता कि टाटा में रहतीं, आ मनवा के रानी के संगे घुमवतीं ।'

पचीसवाँ साल लागल ना लागल बबुआ राजू के बियाह हो गइल । सजधज के बरियात गइल । दुआरी लागते औरत सभे गावे लगली-

अवध नगरिया से अइले बरियतिया,
आहो, रंग पियरे-पियरे ॥
मुनी जी का संग अइले दुनु भइया
एक साँवर, एक गोर,

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

आहो, रंग पियरे-पियरे ।

एक बरिस बाद एगो नन्हकियो भइल । अब बबुआ बड़का-बड़का सपना देखे लगलन । कभी त बेयापार से अपार धन जमा करे सोचेलन, कबो अपना सरकारी बैंक के मनेजर बने के । बाड़न त अभी बैंक में किरानिये बाकी बात करेलन चेअरमैन बने के आ डाईरेक्टर बने के । कहियो-कहियो खीझियालन त नौकरी छोड़ टरेक्टर कीने के बात करेलन । अइसन लागता कि खाली भविष्ये के सपना देखेलन । धरती पर लाते ना पड़े, खाली हवा में उधियालन । अब आस-पास अड़ोस-पड़ोस उनका ला कोई चीजे ना रह गइल । खाली रह गइल हवाई महल आ सपना के दुनिया । अठाइस साल तक बबुआ के इहे सब रहल- बाजार, पइसा आ प्रतिष्ठा ।

अठाइसवाँ साल में बबुआ जी का बुझाइल कि आदमी के मन के सब इच्छा पूरा ना होखेला बलुक कुछ इच्छा, इच्छे रह जाले । बाद में बुझाइल, एह दुनिया में जादा कूद-फाँद कइला से बेहतर बा कि हिम्मत के खेल छोड़के जिनगी में सुख आराम कइसे रही, ओह पर थोड़ा विचार होय । बबुआ जी हिप्पी जइसन बाल कटवा देलन । छिंट के बुशर्ट अब उतर गइल । एक रंग में तनि कम चटक-मटक वाला कपड़ा पहिने लगलन । अब

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बबुआ जी 'क्रान्ति' के बात छोड़िके, व्यवस्था के बात जादा करेलन । अब ऊ बिड़ला, डालमिया ना बनके आपन छोट-मोट एगो घर बनावे का फिकिर में बाड़न । सोचत बाड़न कि कइसे थोड़-मोड़ बैंक बैलेन्स हो जाव ताकि बाकी जिनगी तनि आराम से कटे । पहिले त जीवन बीमा के एजेन्ट के भगा देत रहन, अब ओकरा से बड़ा प्रेम से बतियावेलन । अब बबुआ जी घुम्मकड़ी छोड़ के एक जगह स्थिर होय के चाहत बाड़न ।

बबुआ जी के जिनगी में सात बरीस अउर जोड़ा गइल । अब बबुआ जी पैंतीस बरीस के भइनी आ छोटका मलिकार कहाये लगनीं । आज काल्हू छोटका मलिकार रुआब में बानी । अब उनकर बबुनियो कालेज में चल गइली । अब बबुनी जब कालेज से क्रांति के बात सीख के आवेली आ छोटका मलिकार से देश में क्रांति के बात करे लागेली त छोटका मलिकार घोंघिया के कहिले- 'चुपचाप किताब पढ़ । क्रांति कुछ भइल आ कुछ बाकी बा । हमहूँ क्रांति करे जात रहीं जब तोरा उमिर के रहीं । सेयान होखबू त सब क्रांति भुला जाई ।' छोटका मलिकार का अब क्रांति के नाँवे सुनके ऊब आवेला । जब बोली ले त क्रांति का विरोधे में । समाज में जे खास परिवर्तन होखता उहो उहाँका कोई खास परिवर्तन नइखे बुझात । जइसे-जइसे बबुनी सेयान होत बाड़ी उहाँका एकेगो चिंता बा कि बबुनी का सुनर बर सुंदर घर

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

आ सामने काफी संपत्ति रहे के चाही । एकरा खातिर मलिकार व्यवस्था के अंग भ गइनी । सरकार में कवनो गड़बड़ी ना चाहीं । जे पार्टी राज करता उहे रहो । कवनो परिवर्तन, खराबी करी । इहे छोटका मलिकार अब मार्क्स आ लेनिन के किताब सब पुस्तकालय में भेजवा देनी । गीता प्रेस के मोट-मोट कल्याण, सुखसागर, आ लोकमान्य तिलक के 'गीता रहस्य' पढ़ीले । दूनों बेरा जब केहू सामने बइठ जाय त कानून, सरकार आ नीति के बात करे लागी ले ।

छोटका मलिकार के उमिर अब बेयालिस पर आइल । कान पर के बाल झकझका के पाके लागल । कान से थोड़ा कम सुनइबो करेला । अइसे ठीक से बात करीले ते कवनो गड़बड़ी ना बुझाय, बाकी कबों-कबों झोंक में आ जाइले । पहिले काफी दही-चिउड़ा सबेरे जलखई करत रहनी ह । दिनो के खाना बड़ा पुष्ट करत रहीं । अब त माँस-मछली छोड़ दिहनी फिर भी पेटवा कुछ जादा ही निकल गइल । डाक्टर कादो कहलन ह कि ब्लड-प्रेशर के कुछ शक बा । होय या ना होय, मलिकार अब उहे छोटका मलिकार ना रह गइनी । अब त बड़का मलिकार जइसन देखाइ पड़ीले । मथवा के बालो बड़ा जोर झरे लागल । केहू से बतिआइले त कहिले कि मार्क्स का धरम का बुझाव ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

ना चहिहेन त कुछो होई ? बात-बात में मलिकार रामायन के चौपाई कह देवेलीं । गोसाईं जी के कवितावली बराबर पढ़ीले । छोटका मलिकार अब 'मार्क्सवादी' से 'पूँजीवादी' हो गइनी । एह से लागत बा कि धरम के मृत्यु से बड़ा नजदीक संबंध बा ।

सात बरीस बाद छोटका मलिकार के बाबू जी चल बसनी । छोटका मलिकार के लोग अब 'मलिकार' कहे लागल । अब मलिकार एक तरह से चुप्पा बन गइनी । अब केहू में रुची ना लीं । मलिकीनी घर में रहिले आ मलिकार बाहरे दलानी में सुत जाइले । मलकिनी के खोज-खबर खाली दिन में भोजने के समय में होला । दुनू बेकत में कुछ बातचीत होला । रात में मलिकार दलान में भोजन करीले । रात में कभी सुर में आ कभी बेतुका भजनो गाइले -'कवन ठगवा नगरिया लूटत हो, चंदन काठ के बनल खटोलना, तापर दुलहिन सूतल हो ।' बबुनी के शादी हो गइल । दमाद बड़का सरकारी अफसर बानी । ससुरार अइला पर मलिकार से कई गो बात प बहसो होला । मालिक कहिले अब दुनु आदमी घर सम्हारऽ मलिकार वानप्रस्थ लेब । मलिकार के सब वासना अब खतम हो गइल । अब अकेले जीही लें । धेआन में रहीले, प्रार्थना में गुमसुम ।

छपनवाँ साल में मालिक सचहूँ साधू हो गइनी । मलकिनी के स्वास्थ्य गिर रहल बा । मलिकार चुप बानी, जे होय के बा ऊ

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

त हो के रही । मलिकार मठ बनवा रहल बानी । 'लोहिया मठ' का साधू पास घंटो बइठल रहिले । कहीं गीता सुने, कहीं रामायन सुने, धावल फिरिले ।

अब देखीं मलिकार तीरसठवाँ साल में फेर बच्चा बन गइनी । घर में मिठाई किनाई त पहिले मलिकार का मिलो ना त जुलूम होई । कब खुश होखब, कब रुसब, पता चलल मुसकिल बाटे । अपने आप में मलिकार समेटाइल रहिले । बुझाता कि कुछ दिन में मलिकार मौनी बाबा बन जायेब ।

सत्तरवाँ साल में मलिकार का इहो ना बुझाला कि हम घर के मालिक हईं कि कवनो जिनिस । रात में एक दिन अपने गावत रहीं–

हे गंगा मइया तूं गोदिया बिठाल,
हई हम बेटवा तोहार ।
चलल परनवाँ, संजनवा का राहे,
तोहरा से एके गोहार ।
माटी के तनवा माटी मिलइह कि,
बनी जाई सांई के मजार ।

❑

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'जन्म आ छठी' कवना विधा के रचना ह ?
2. एह निबंध में नायक के बा ?
3. 'जन्म आ छठी' के लेखक के ह ?
   (क) विद्यानिवास मिश्र, (ख) हरिशंकर वर्मा,
   (ग) अनिलकुमार आंजनेय, (घ) डॉ. सुरेन्द्र पाल ।
4. केतना बरिस के उमिर में राजनन्दन बाबू के बियाह होता ?
   (क) बीस, (ख) पच्चीस,
   (ग) चालीस, (घ) तीस ।
5. मालिक कतना साल में साधू हो गइनी ?
   (क) अस्सी, (ख) साठवाँ,
   (ग) नब्बे, (घ) छपनवाँ ।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. 'जन्म आ छठी' में प्रयुक्त लोक गीत के सारांश लिखीं ।
2. राजनन्दन बाबू कब छोटका मलिकार कहाये लगनीं ?
3. आठवाँ बरीस से चौदहवाँ बरिस ले लरिका सब कइसन-कइसन सवाल पूछेलन ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'जन्म आ छठी' के आधार पर आदमी के जीवन यात्रा के वर्णन करीं ।

कार्य परियोजना

1. केहू-बूढ़-पुरनिया के 'जन्म आ छठी' निबंध सुनाई आ ओकर प्रतिक्रिया लिखीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अध्याय एकइस

डॉ. परमेश्वर दूबे शाहाबादी

[शाहाबाद के निवासी । टेल्को, जमशेदपुर में नोकरी । असामयिक निधन । कमे समय में कविता-हास्य-व्यंग्य, मुक्त छंद आ नवगीत अउर निबंध-फीचर, रिपोर्ताज, ललित निबंध के लेखक । 'क्षत्रज्ञ' कविता संग्रह चर्चित । भोजपुरी के लोककथा के संग्रह, अध्ययन आ शोध । मरणोपरांत पी-एच.डी ।]

रूप के हिरन

किलकारी नदियन के
गोद में पहाड़ी के
थथमल बा रूप के हिरन ।
गते-गते उतरेला साँझ के ई गोरी
जनमतुआ पलना मे चिरईं के लोरी ।
गलबाँही दे दे के

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

जंगल अलापेला
थिरकेला मंथर पवन ।...
नदिया तूफानी ना मानेले घेरा,
अल्हड़ जवानी प रूप के दरेरा ।
मृगछौना मड़ई के
पंजरे में फुदुकता
हो न जाय सीता हरन ।...
महँगी के बहँगी प देह के सुखौता,
बेकल जवानी प जीभ के सरौता ।
हाथ के तिजोरी में
दौलत पसीना के
पेट में बा लंका दहन ।
बीन प सँपेरा के डोले ले नागिन
बाँस के पेटारी में किस्मत अभागिन,
संझा सिहर जाये
नाग के जहर पी के-
विकृत मन करेला वमन ।
थथमल बा रूप के हिरन !

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. परमेश्वर दूबे शाहाबादी कहाँ के निवासी रहीं ?
2. शाहाबादी जी कहाँ काम करत रहीं ?
3. 'रूप के हिरन' कवना विधा के कविता ह ?
   (क) गीत (ख) नवगीत
   (ग) प्रबंध काव्य (घ) मुक्त छंद
4. कवि का कवन चीज के किलकारी सुनाई पड़त बा ?
   (क) पहाड़ी के (ख) नदी के
   (ग) हिरन के (घ) रूप के

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कवि के परिचय दीं ।
2. कवनो एगो छन्द के भावार्थ लिखीं ।
3. मेहनत के बाद पेट ना भरला के स्थिति के बरनन एह नवगीत में कइसे आइल बा ? लिखीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'रूप के हिरन' कविता के भावार्थ लिखीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

2. 'नवगीत' कविता के एगो सशक्त विधा ह ? एकरा बारे में विचारपूर्ण लेख लिखीं ।
3. 'रूप के हिरन' में जीवन के 'जटिलता के जवन बरनन आइल बा, ओकरा बारे में बतलाईं ।

परियोजना कार्य

1. कवनो दोसरा कवि के दूगो 'नवगीत' के रचना प्रस्तुत करीं आ ओह में आइल जीवन के कठिनाई पर विचार व्यक्त करीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अध्याय बाइस

डॉ. उषा वर्मा

[डॉ. उषा वर्मा के जनम सीवान जिला के महमूदपुर गाँव में भइल । एह घड़ी इहाँ के जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बानी । इहाँ के भोजपुरी आ हिंदी दूनों में लेखन करीले । इहाँ के प्रकाशित किताबन के नाँव बा- लाइची (कहानी संग्रह), अंकुर (निबंध संग्रह) । कहानी संग्रह 'लाइची' पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पुरस्कार मिलल बा । 'काकी के गहना' में मेहरारू के दु:ख भरल जिनगी के कथा कहल गइल बा ।]

काकी के गहना

काकी के गहना के बड़ा सोर रहे । गाँव-त-गाँव ओह जवार में इनका अइसन पाँच सेर सोना आ दस सेर चानी के गहना केहू के ना रहे । बिआहो भइल रहे बहुते धूमधाम से । तीन भाई के पीठ पर के तेंतर दुलारी बहिन रहली । बाबूजी अपना जमाना

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

के नामी-गिरामी मोख्तार रहनी । खूब नाँव, जस आ धन कमइले रहनी । अपनो से बड़हन घर में बेटी के बिआह कइनी । जेतने बड़हन घर ओतने सुन्नर बर । दुआर पर बरिआत लागल त बर देख के काकी के माई-त-माई गाँव भर के मन जुड़ा गइल । जे देखे ओकरे मुँह से अनासे निकल जाव- "वाह लइका त लइके बा- ।" लंबा-चौड़ा, गोरा चिट्टा, बड़-बड़ आँख आ चमकत लिलार । जे देखे देखते रह जाव ।

लइकी के बिआह में सराती मेहरारू लोग दूइए गो चीज देखे खातिर बेसी मड़राला-दुअरा पर बर आ आँगना में गहना । काकी के गहना बेजोड़ चढ़ल रहे । गुरहेत्थी क के भसुर के अँगना से जाते-जात गाँव के मेहरारू गहना देखे खातिर झूक गइली । का बूढ़, का जवान, का बिअहल आ का कुँआर-सभकर आँख चौंधिया गइल । बुझाव, जइसे मड़वा में कवनो राजा-महराजा के खजाना खुलल बा । पीअर दग-दग सोना के भारी-भारी किसिम-किसिम के गहना देख के लोग दाँते अँगुरी काटे लागल । सोरह थान त अकेले हाथ के रहे । कँगना, पहुँची, बाला, ब्रेसलेट, बाजूबंद, हाथ-सिकड़ आ दसो अँगुरी के खानी बिखानी के अँगूठी । छह थान गला के रहे- कंठा, हँसुली,

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बड़हन लाकेट के चेन । कानो के उहे हाल रहे- इयरिंग, झुमका, कनफूल, बाली, तरकी । नाक के नथिया, छूँछी, झुलनी । माथ पर के टीका, टैरा, झपटा, बननी । ताग-पाट ढोलन में खूब सुन्दर बड़हन नक्कासीदार ढोलना लागल रहे । हलुक-पातर त कवनो रहबे ना कइल । किसिम-किसिम के, भारी-भारी आ खूबे नक्कासीदार । चानी के गहना त ओहू से भारी-भारी रहे । दू जोड़ी पावजेब, झाँझ, छाड़ा, गोड़ाई, चार जोड़ी पायल आ दस जोड़ी बिछिया । सात लर के भर डाँड़ के डाँड़ा । काकी के ससुर बहुते शौखीन आदमी रहलन । धनो-दौलत अफरात रहे । वकालत के पइसा रहे । औलाद दू गो आ उहो बेटे । पहिलौंठी के बेटा के बिआह रहे । सब सरधा पुरा लेबे के रहे । बेटा के महतारी चार साल पहिलहीं गुजर गइल रहली । उनको अरमान के इयाद रहे । आपनो सुभाव साहखर्चे रहे । एह से खर्चा करे में कवनो तरह के कोताही ना भइल । असली बात रहे पइसा । कहल न जाला -"दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे ।" धन के बदौलत जे-जे चहलन से-से कइलन । साल भर पहिलहीं से दूआर पर सोनार बइठा के गहना बनवावल गइल । कुछ गहना कटक से आइल ।

जे हाल बर के देख के सराती लोग के भइल रहे, उहे हाल कनिया के देख के बेटहा किहाँ भइल । जे-जे सोहागिन

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

डोली में कनिया के माँग बहोरे गइली, उनका रूप पर मोहा गइली आ बखान करत अइली ।

"एकदम मोम के गुड़िया बाड़ी ।"

"सीता त सीते बाड़ी । बड़ा सोच-समझ के इनकर महतारी बाप इनकर नाँव सीता धइले बा ।"

"भगवान खूबे जोड़ी मिलवले बाड़न ।"

बाकिर भगवान त कुछ दोसरे सोचले रहलन । अबहीं सालो ना लागल रहे कि अचानक एक घंटा के बेरामी में सब उलट-पुलट गइल । वकील साहब पर गाज गिरल । बड़ बेटा के शोक में खटिया ध लिहलन । काल्ह के कनियाँ, आज कुलच्छनी कहाये लगली । गाँव के सोहागिन मेहरारू लोग त उनका नाँवें से परहेज करे लागल । बाकिर, ऊ एकदम पथरा गइल रहली । केहू कुछो बोले, ऊ खाली टुकुर-टुकुर ताकत रहस । महीना भर बाद उनकर बाबूजी अइलन आ अपना बेटी के अपना साथे ले जाये के बात चलवलन । पटी-पटिदार भा गाँव-घर के लोग जे बोलले होखे, उनकर ससुर उनका के कबहूँ कवनो कुबोल ना बोललन । नइहर जाये लगली त अपना सामने उनकर सब बक्सा पेटी गाड़ी पर लदवा के समधी से एतने कहलन -"अबहीं त हम राउर बात मान लेत बानी । साइत इहे ठीक बा एह घड़ी इनका खातिर ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बाकिर, इनकर घर इहे बा । जब चाहस आवस, रहस ।'' एतना कहत-कहत उनकर गला भर आइल । आँख से झर-झर लोर झरे लागल । दूनो समधी एक दोसरा के अँकवारी में भर के खूब रोअल लोग ।

नइहर में माई इनका के देख के एतना रोअली जेतना इनका बिदाइयो बेरा ना रोअले रहली । भउजाई लोग अपना आँचरा से इनकर लोर पोंछल । पहिले से अधिका दुलार होखे लागल । भाई लोग घर में घुसते पहिले बहिने के खोजे । परब-त्योहार में सबसे पहिले इनकरे कपड़ा किनाव । भतीजा-भतीजी इनके भिरी सटल रह सन । छोटकी भउजी के इनका अइला के साल भीतरे बेटा भइल । केहू ना कहत रहे कि ऊ औलाद के मुँह देखिहन । बिआह के पाँच बरिस बीत गइल रहे । ससुरा के कुलच्छनी, नइहर में सुलच्छनी कहाये लगली । गाँव में केहू के बिआह होखे एक बेर इनका गहना के बात जरूर चले । असहीं गाँव के एगो बिआहे के बात चलत रहल कि छोटकी भउजी पूछ देहली -''बबुनी आपन सब गहना ले आइल बानी कि ओहिजे बा ?''

''आइल बा'' कह के ई दूअरा जाये लगली । जात-जात भउजी पर नजर पड़ गइल । उनकर आँख सीसा लेखान चमकत

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

रहे ।

गँवे-गँवे नइहर के घर गिरहस्थी के भार इनके पर आ गइल । तीनों भउजाई अपना-अपना सिंगार-पटार पर आ बाल-बच्चन में अझुराइल रहे लोग । इहे छुट्टा देह लउकस । घर से ले के आदमी जन ले सभे कवनो काम खातिर इनहीं के खोजे । इहो दिन-भर अझुराइल रहस काम-धाम में । सभकर सुध राखस बाकिर आपने सुध ना रहे । ना खाये पिये के धेयान आ ना पेन्हें ओढ़े के चाव । इहाँ तक ले कि अपना बक्सा-पेटी के चाभिओ छोटकी भउजी के सऊँप देले रहली । सउँपली का, एक दिन छोटकी भउजिये कहली -"आदमी जन के घर बा आ रउरा अपना बक्सा पेटी के सुधे ना रहे । जानते बानी कि जवार-भर में राउर गहना के सोर बा । दीं आपन गहना वाला बक्सा के चाभी, हम अपना आलमारी में रख दीं । जब जरूरत होखे ले लेब ।" ओही दिने एगो पेटी में सब गहना सरिया के ताला बंद कइली आ ओकर चाभी छोटकी भउजी के दे दिहली ।

ओह चाभी के छोटकी भउजी के आलमारी में जात भइल कि तीनों भाई-भउजाई में मन मोटाव शुरू हो गइल । बिन बातो के बात झगड़ा होखे लागल । बात एतना बढ़ल कि एक अँगना में तीन गो चूल्हा जरे लागल । माई-बाबूजी के धोबी के कत्ता के

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

हाल हो गइल- ना घर के ना घाट के । देखते-देखते दूनो जना कौड़ी-कौड़ी के मोहताज हो गइल लोग । दू जून के रोटी खातिर कबो बड़का के त कबो मझिला के त कबो छोटकू के दूआरी सेवे के पड़े लागल । बाकिर ई का करस ? कहाँ जास ? छोटकी भउजी के सेवा टहल में भर दिन लागल रहस । भाई-भउजाई के आँख त बदलिये गइल रहे । भर-भर दिन खटलो पर ओ लोग के आँख में ई बइठले लउकस आ इनकर नीमनो काम में उनका खोटे लउके । एकदम साँप-छुछुन्दर के गति हो गइल रहे । ना बुझाव कि का करस, कहाँ जास । रह-रह के ससुर के कहल बात मन पड़े..... "इहे इनकर घर बा । जब चाहस, आवस, रहस ।" बाकिर, जास कइसे ? कवन मुँह से ? देवर के बिआह में खबर आइल । ना गइली । जाउत के जनम में खबर आइल । ना गइली । इहाँ तक ले कि ससुर गुजर गइलन । ना गइली ।

बारह बरिस पर घूरो के दिन पलटेला । भगवान पासा पलटलन । देवर के बेटा के जनेव के नेवता आइल । देवर के चिट्ठी के साथे-साथे जाउतो के हाथ के लिखल एक लाइन के चिट्ठी रहल -"काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" डूबत के तिनका के सहारा मिल गइल । का जाने 'काकी' सबद के कमाल रहे कि नइहर से अगुताइल मन के छटपटाहट - जाये खातिर तुरते

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

तइयार हो गइली । सभका से कहत फिरस –"जाउता बोलवले बाड़न –"काकी के मालूम कि तू जरूर अइह ।" "जायब जरूर ।" सभे चकित । काकी निहाल । जाये के तइयारी में छोटकी भउजी से अपना गहना वाला पेटी के चाभी मँगली । भउजी उठली आ घुमा के फेंक देहली ।

"जाईं !" बड़ा अगराइल बानी । ऊ लोग त जइसे पलंग पर बइठा के खिआई ।"

टूटल मन बेजुबान बना देला । चुपचाप चाभी उठा के आपन पेटी खोललीं । एतना दिन के बाद जात बानी । देआदिन के मुँहों मइखीं देखले । ना जाउते के देखले बानी । ओतना गहना बा । ओही में से देआदिन के मुँह देखाई दे देब । जाउत के जनेव में नेग देब । बाकिर ई का ? पेटी में गहना के डिब्बा त सब बा बाकिर सब के सब खाली । छोटकी भउजी के चाभी देबे से पहिले सब गहना रहे फिर भइल का ? घबराइले गइली छोटकी भउजी लगे ।

"छोटकी भउजी ! ई का भइल ?"

"काऽ ?" भउजी गभुआइले बोली ।

"पेटी में गहना के सब डिब्बा खाली बा ।"

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बानी ?''

''ना भउजी, अछरंग के बात नइखे । चाभी देबे के पहिले हम देखले रहनी । सब गहना रहे ।''

''त हम चोरा लेहनी का ?'' भउजी चिल्ला के बोललली । का जाने का सोच के ई लपक के उनका मुँह पर हाथ ध दिहली । ''बस-बस भउजी, अब चुप हो जाईं । ई बात हमरे रउरा ले रही । भइया किरिया, जे रउरा केहू से कुछ कहीं ।'' भउजी हकबका के ताके लगली ।

दोसरा दिने भोरे-भोरे ससुरा जाये खातिर टायर गाड़ी पर आपन सब बक्सा पेटी लदवा के बइठ गइली । छोटका भाई चहुँपावे गइलन ।

ससुरा में देवर-देवरानी हाथो-हाथ लिंहलस । ''काकी-काकी'' कह के दस बरिस के जाउत अइसन सटलन कि बुझाव, कहिया के जान पहिचान बा । देवरानी कहस -''इहे नू आपन खून कहाला । दीदी जी ! तनिको बुझाता कि गुंजन रउरा के पहिले पहिल देखत बाड़न ?'' 'काकी-काकी' सुन के काकी जुड़ा गइली । जइसे सब दुख सिरा गइल । जाउत में अइसन अझुरइली जइसे इनके लइका होखस । संगही खाइल । संगही सूतल । काकी से बे कथा कहानी सुनले गुंजन ना खास ना

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सूतस । देर रात ले बतकही होखे काकी-गुंजन में । ओह रात के कुकुर बड़ा बोलत रहे । बतकही करते-करते गुंजन काकी के गोदी में तनी आउरो समा के पूछ देहलन -"काकी ! तोहरा पाले बहुते गहना बा का ?" काकी के त जइसे बिच्छी मरले होखे । छपटा के पूछली -"के कहेला बाबू ?" "माई-बाबूजी कहेला लोग । एही खातिर त तोहरा के बोलावल गइल ह । काल्हे माई, बाबूजी से कहत रहली कि बहुत दिन बाद पकड़ाइल बाड़ी । अबकी सब गहना गुंजन के दे देस, तब नइहर जास । हमरा के देबू नू काकी सब गहना ?" जवाब ना सुन के गुंजन छरिया गइलन । काकी के झोर-झोर के पूछे लगलन -"काकी ! काकी ! बोलऽ ना । देबू नू हमरा के सब गहना ?" काकी जइसे इनार में से बोललीं -"हँ, देब ! दे देब सब गहना ।" उनकर साँस फूले लागल । पूस के महीना में पसीना से नहा गइली । तबे से बेराम बाड़ी । जब-तब साँस फूले लागेला । खाँसते-खाँसते सुरसुरी चढ़ जाला । पसीना छूटे लागेला । खात में अकसरहाँ सरक जाला । बाकिर अपना बक्सा-पेटी के चाभी हरमेसा खूब गँठिया के अपना अँचरा के खूँटा में बन्हले रहेली ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'काकी के गहना' कवना विधा के रचना ह ?
   (क) कहानी (ख) निबंध
   (ग) रेखाचित्र (घ) आत्मकथा
2. डॉ. उषा वर्मा के जनम कवना जिला में भइल ?
   (क) छपरा (ख) सीवान
   (ग) रोहतास (घ) भभुआ
3. डॉ. उषा वर्मा के कहानी-संग्रह के का नाँव ह ?
   (क) लाइची (ख) धुँआ
   (ग) काकी के गहना (घ) कवनो ना
4. बिआह के साले भर के भीतर का भइल ?
5. काकी दोबारा कब ससुरा गइली ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका के छोटहन परिचय लिखीं ।
2. लइकी के बिआह में सराती मेहरारू लोग का देखे खातिर आवेला ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

3. काकी के गहना के आ कइसे बनववले रहे ?
4. चले के बेरा ससुर का कहले रहस ?
5. काकी के गहना के चखोरा लेहल ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'काकी के गहना' कहानी के सारांश लिखीं ।
2. पठित कहानी में मेहरारू के दुःख भरल कथा कहल गइल बा । एह कथन के समीक्षा करीं ।

परियोजना कार्य

1. पुरनका ढंग के बनल गहना के नाँव लिखीं आ बताईं कि ऊ सब कवना अंग में पेन्हल जाय आ कवना धातु के बनत रहे ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अध्याय तेइस

गंगा प्रसाद अरुण

[अरुण जी के जनम रोहतास जिला के बढ़वल गाँव में 4 जनवरी, 1947 ई के भइल । राँची विश्वविद्यालय, राँची से हिंदी (प्रतिष्ठा) स्नातक । भोजपुरी में गीत संग्रह 'हहरत हियरा' (1974 ई.) आ हिंदी में गीत-नवगीत संग्रह 'तिरती सी परछाइयाँ' (2002 ई.) प्रकाशित भइल । पत्र-पत्रिका में, आकाशवाणी, दूरदर्शन से गीत-नवगीत आदि प्रकाशित-प्रसारित । 'लुकार' आ 'विकासवार्त्ता' के संपादन । कई संस्थन से जुड़ के कार्य । टेल्को, जमशेदपुर से शिक्षा आ सामुदायिक सेवा के वरीय पदाधिकारी के रूप में कार्य आ अब सेवानिवृत्त ।]

नवगीत

अँखुआइल मन बिरवा
भावन के भेस मिलल ।
समय के सियाही के
पसरल परिवेश मिलल ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

टेम्ही अस दियरी के
कलपत करेज के,
अकसरुआ जिनिगी के,
करिखाइल तेज के ।
प्रान के अपरिचो के
अँधियारा देश मिलल ।
धाम के झरोखा अस,
सपना के गाँव अस ।
जीवन के मरुथल में,
उफनत बदलाव अस ।
बोझ बनल छाती पर,
अजगर अवशेष मिलल ।
एक साध कंचन अस,
कल्पित अतिरेक अस ।
मौन-मुखर-मंथर अस,
टिसुना अस, टेक अस ।
छंदहीन शब्द मिलल,
सहमल संदेश मिलल ।

❑

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गंगा प्रसाद अरुण के जन्मतिथि बताईं ।
2. अरुण जी के जन्म स्थान कहाँ बा ?
3. अरुण जी कहाँ कार्यरत रहनीं ?

   (क) जमशेदपुर (ख) राँची

   (ग) रोहतास (घ) बक्सर
4. अरुण जी के भोजपुरी गीत संग्रह के नाम बताईं ।

   (क) पाँख सतरंगी (ख) हहरत हियरा

   (ग) बूँद भर सावन (घ) गीत जे गूँजल

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. गंगा प्रसाद अरुण के संक्षिप्त परिचय लिखीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी कविता के विकास में नवगीत के स्थान के परिचय देत ओमें गंगा प्रसाद अरुण के योगदान के रेखांकित करीं ।
2. पठित नवगीत के अर्थ अपना शब्दन में लिखीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

परियोजना कार्य

1. अपना शिक्षक से दूगो नवगीतकार आ दू गो मुक्तछंद में कविता लिखेवाला कवियन के पता करीं आ ओह लोग के आधुनिक भावबोध के एकहगो रचना लिखीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

मंगल गीत

गाई के गोबरे महादेव, अँगना लिपाईं हे ।
गजमोती आहो महादेव, चउका पुराईं हे ॥
चनन चीरी चीरी, पिढ़इ बनाईं हे ।
ताहि पीढ़हि बइठे महादेव, जटा ओरमाईं हे ॥
चउका बइठल महादेव, गइलें अलसाईं हे ।
हुतूका का मरले गउरा देइ, लिहली जगाईं हे ॥
हुतूका का मरले महादेव, गइलें कोहनाईं हे ।
बहियाँ लफाइ गउरा देइ, लिहली मनाईं हे ॥
बिअहे का बेरिया महादेव, कछुओ ना चाहीं हे ।
गवना का बेरिये महादेव, सब कुछ चाहीं हे ॥
केइएँ देला हाथी घोड़ा, केइएँ धेनु गाईं हे ।
केइएँ देला आपन धियवा, अँगुरी धराईं हे ॥
बाबा देले हाथी घोड़ा, मइया धेनु गाईं हे ।
अम्माँ दिहली आपन धियवा, अँगुरी धराईं हे ॥
कूदत जाला हाथी घोड़ा, कूदत धेनु गाईं हे ।
धिया के डोलिया चमकत जाला, हँसेले जवाँइ हे ॥

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पूरबी गीत

-महेन्द्र मिसिर

अँगुरी में डँसले बिया नगिरिया रे ननदी, दियरा जरा दे ।
दियरा जरा दे आपना भइया के जगादे
नसे-नसे उठेला लहरिया रे ननदी, दियरा जरा दे ।
एक त मुएनी हम आपना दरद से
दोसरे ई रतिया अन्हरिया रे ननदी, दियरा जरा दे ।
पटना सहरिया से बैदा बोला दे
पोरे-पोरे उठेला दरदिया रे ननदी, दियरा जरा दे ।
कहत महेन्दर ननदी बैदा बोला दे,
उनहीं से उतरी इ लहरिया रे ननदी, दियरा जरा दे ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

लोककथा

कउआहँकनी रानी

एगो राजा रहन । उनका सात गो रानी रही । छव जानी के लड़िका ना भइल । बाकिर छोटकी रानी के लड़िका होखे के रहे त छवो रानी के बहुत डाह भइल कि अब राजा छोटकी रानी के आउर मनिहें ।

जब छोटकी रानी के नउआँ महीना चलल त राजा एक दिन शिकार खेले जाए लगलन त छोटकी रानी कहली कि कहीं हमरा दरद होई त हम का करब । राजा एगो घंटा देलन कि एकरा के बजा देबू त हम चल आएब ।

राजा जब चल गइलन त रानी जाँचे खातिर घंटा बजा देली । राजा चल अइलन । पूछलन त रानी कहली कि जाँचे खातिर बजवली हँ । राजा फेर शिकार पर चल गइलन । रानी फेर घंटा बजा देली । राजा फेर चल अइलन । आ अबकी खिसिया के गइलन ।

एने छवो रानी चमइन के बोला के ढेर धन देके कहली कि छोटकी रानी के लड़िका होखे त बीग दिह आ ईंटा-पत्थल ध दिह कि इहे भइल ह । चमइन मान गइली ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

छोटकी रानी के जब दरद भइल त घंटा पिटते रह गइली, राजा ना अइलन । उनका बेटा-बेटी दूनो भइल, जउआँ, त चमइन बीग के ईंटा-पत्थर ध देलस ।

जब राजा अइलन त पूछलन कि कवन लड़िका भइल ह त छवो रानी कह देली कि ईंटा-पत्थल भइल बा, जाके देखीं ।

राजा छोटकी रानी के घर से निकाल देलन आ एगो अलगा छोटहने घर में रख देलन आ कहलन कि भर दिन कउआ हाँकत रहिह । रानी कउआहँकनी हो गइली ।

आ ओने ऊ दूनू लड़िकन के एगो कोंहइन लेके पोसे लागल । जब ओकनी के सेयान भइलन स त कोंहार माटी के हाथी-घोड़ा बनाके देलस कि जा खेल लोग ।

एक दिन रानी लोग पोखरा में नहात रहे आ दोसरा घाट पर ऊ दूनू लड़िका खेलत रहन स आ कहत रहन स कि "माटी के हाथी माटी के घोड़ा कहीं पानी पियेला !" त ऊ लड़िका कहलन स कि "रानी कहीं ईंटा-पत्थल बियाली !"

बस, छवो रानी घरे आके खटवाँस ले लेली कि "जब ले हमनी ऊ कोंहार के लड़िकन के करेजा पर ना नहाएब, ना उठब ।" तब राजा जल्लाद के बोला के कहलन कि ऊ लड़िकन के करेजा निकाल के ले आव । जल्लाद सब ओकनी के मार के करेजा निकाल ले अइलन, त रानी लोग उठ गइली ।

ऊ दूनू के करेजा धूरा पर बीग दियाइल, त लड़िका आम के गाछ भइल आ लड़की केदली के गाछ भइली ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

आ सिपाही के कहलन कि फूल तूड़ ले आव । सिपाही जब फूल तूड़े गइल त केदली के गाछ कहलस कि-

"सुनऽ सुनऽ ए अमोला भऽइया !
बाबा के सिपाही फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बऽहिना !
डाढ़-पात देहू ना आकाश हो !"

तब केदली के गाछ के डाढ़-पात उपर उठ गइल । सिपाही लवट के चल आइल ।

तब रानी लोग फूल तूड़े गइली । त फेर केदली कहली कि-

"सुनऽ सुनऽ ए अमोला भऽइया !
छवो रानी फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बऽहिना !
डाढ़-पात देहू ना आकाश हो ।"

फेर केदली के गाछ के डाढ़-पात उपर चल गइल । त राजा अपने फूल तूड़े गइले । त केदली कहली कि-

"सुनऽ सुनऽ अमोला भऽइया !
बाबा अभागा फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बऽहिना !
डाढ़-पात देहू ना आकाश हो ।"

आ केदली के गाछ के डाढ़-पात ऊपर चल गइल । त अन्त

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

में राजा कहलन कि कउआहँकनी के फूल तूड़े के भेजल जाय । त जब ऊ फूल तूड़े गइली त केंदली फेरू कहली कि-

"सुनऽ सुनऽ ए अमोला भऽइया !
अम्मा अभागी फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बऽहिना ?
डाढ़-पात देहू ना झुकाय हो !"

डाढ़-पात भुँइयाँ में सोहर गइल । छोटकी रानी भर फाँड़ फूल तूड़ के दे देली । जब राजा पूछलन त कहली कि ऊ गाछ दूनो हमार बेटा-बेटी ह, रउआ गाछ उखाड़ के देखलीं ।

जब गाछ उखाड़ल गइल त ओह में से राजा के बेटा-बेटी निकलल लोग । तब राजा के सब बात के पता चल गइल । ऊ छवो रानी के आ चमइन के गड़हा खोनवा के मूड़ी निकाल के गड़वा देलन आ ओह लोग के मूड़ी पर दही धरवा के कुत्ता से कटवावल गइल । छोटकी रानी जे कउआहँकनी कहात रहली रानी भइली आ ई दूनू लड़िका लोग राजा के बेटा-बेटी बनके सुख से रहे लागल लोग ।

-संगिरिहा- **सुशीला पाण्डेय**

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

संदर्भ ग्रंथ

1. **निरगुन बानी** (संपादक कुलदीपनारायण 'झड़प', डॉ. शंभुशरण)

2. **भोजपुरी के अस्मिता चिंतन** संपादक- आनन्द संधिदूत
   कृष्णानन्द 'कृष्ण'
   भगवान सिंह 'भास्कर'

3. **मानिक मोर हेरइलें** विद्यानिवास मिश्र
4. **भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत** संपादक- सूर्यदेव पाठक 'पराग'
   भगवान सिंह 'भास्कर'

5. **भोजपुरी साहित्य का इतिहास** डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय
6. **भोजपुरी भाषा का इतिहास** रासबिहारी पाण्डेय
7. **भोजपुरी भाषा और साहित्य** डॉ. उदयनारायण तिवारी
8. **भोजपुरी वर्तनी** डॉ. विश्वनाथ सिंह

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कार्पोरेशन लिमिटेड
पाठ्य पुस्तक
पटना

BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD. BUDH MARG, PATNA - 1

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)